IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ईमाइल दुर्खीम का सामाजिक एकता का सिध्दांत

प्रा. डॉ. आचार्य राजा धोंडीबा
समाजषास्त्र विभाग प्रमुख
नवगण कला और वाणिज्य महाविद्यालय
परली वैद्यनाथ, जि.बीड

टाल्कट पारसंस ने दुर्खीम की जीवनी और कृतियों पर लिखते हुए एक स्थान पर कहा है की, आधुनिक समाजषास्त्रीय सिध्दांत के जनक रूप में दुर्खीम अग्रणी है। इस सोपान में वे मॅक्स वेबर को दूसरे स्थान पर रखते है। दुर्खीम ने मुख्य रूप से चार पुस्तके लिखी है। इनके अतिरिक्त उनके कई फुटकर निबंध है मोनोग्राफ है और कई लिपिबध्द व्याख्यात है जिन्हे समय समय पर उन्होने दिया है। दुर्खीम ने अपने जीवनकाल में सामाजिक व्यवस्था के विष्लेषण के लिये एक विषद रूपरेखा तैयार कियी थी। समाजषास्त्र के अतिरिक्त उन्होने मानवषास्त्र में भी बहूत कुछ लिखा है। वे विचारक और विद्वान, जो दुर्खीम से बुनीयादी रूप मे असहमत है वे भी दुर्खीम के संदर्भ के बीना नहीं चल सकते। स्वयं दुर्खीम के जीवनकाल में उन्होने जो रूपरेखा बनाई थी उसमें संषोधन हुआ है। इसके होते हुए भी बराबर दुर्खीम का यह प्रयास था की वे सामाजिक व्यवस्था की प्रकृती की मीमांसा करे और इस व्यवस्था से व्यक्ती कितना जूडा हुआ है, उसकी व्याख्या करे।

सामाजिक विचारकों की श्रेणी में दुर्खीम का नाम काफी लोकप्रिय है। कॉम्ट समाजषास्त्र के जन्मदाता माने जाते है जिन्होंने समाजषास्त्र का नामकरण किया किंतू दुर्खीम समाजषास्त्र को एक पृथक विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित किया है। दुर्खीम को समाजषास्त्र में कॉम्ट का उत्तराधिकारी माना जाता है।[1] दुर्खीम ने अनेक नविन अवधारणा एवं सिध्दांत प्रस्तुत करके समाजषास्त्री जगत में अपने आपको ही प्रतिष्ठित नहीं किया है बल्कि समाजषास्त्र की इन ग्रंथोने समाजषास्त्री साहित्य के भंडार को बहूत अधिक समृध्द किया है हम यहाँ पर समाजषास्त्र को दुर्खीम के द्वारा दिये गए योगदान को समझनेका प्रयास करेंगे।

ईमाइल दुर्खीम का जीवन परिचय :–

ईमाइल दुर्खीम का जन्म 15 अप्रैल 1858 को उत्तरी पुर्वी फ्रांस के लॉरेन क्षेत्र में स्थित एपीनल नामक स्थान में हुआ था। अपनी स्थातक तक की षिक्षा उन्होंने एपीनल में पुर्ण की। उच्च षिक्षा के लिए वे फ्रांस की राजधानी पेरिस चले आये। वहां की इकोल नार्मेल एकादमी मे वे प्रवेष पाना चाहते थे, क्योंकी विष्व के प्रतिभाषाली विद्यार्थी यही पढा करते थे। इस संस्था फ्रांसिसी, लेटिन, ग्रीक, दर्षन आदि के साथ साथ विविध पाठयक्रमोंका अध्ययन कराती थी। दो असफल प्रयासों के बाद उन्हे 1879 मे इस संस्थामें प्रवेष मिला। उनकी रूची वैज्ञानिक मनोवृत्तीवाले विषयों मे थी। किंतु वहा जिस पाठक्रम में प्रवेष मिला था वह इसके विपरित था। अध्यापकों से तर्क वितर्क करनेवाले दुर्खीम ने पीएच.डी. तक की उपाधी प्राप्त की।

दुर्खीम ने 1998 में समाजषास्त्र संबंधी पत्रिका का प्रकाषन भी किया। उन्होने अपने जीवनकाल में अनेक महान ग्रंथो की रचना की, जिनमे द रूल्स ऑफ सोसियोजलॉजिकल मैथर्ड, सोसाइट, इलिमिन्ट्री फॉमस ऑफ रिलीजन लाईफ, एज्यूकेषन अँड सोषियोलॉजी, सोषियोलॉजी एण्ड फिलासॉफी, मॉरल एज्यूकेषन इत्यादी है। दुर्खीम की पत्नी लुइस ड्रेफ्रू उनकी पुस्तकों की प्रूफ रिडिंग संपादन आदीमें उनकी काफी सहायता करती थी। उनकी दो सन्तानों मे पुत्र आन्ध्रे और पुत्री मेरी थी। वे अपने परिवारजनों से अपार स्नेह करते थे। दुर्खीम के विचारोपर रूसो तथा ऑगस्ट कॉम्ट का प्रभाव अधिक है। दुर्खीम ने समाजषास्त्र को वैज्ञानिक रूप देते हुए यह कहा था की, सामाजिक घटनाओं तथा समाज का विष्लेषण निरूपण वैज्ञानिक आधारपर होना चाहिए। उन्होंने समाज के विभिन्न अंगो मे एकीकरण स्थापित करने का प्रयास किया।[2] समाजषास्त्रीय दृष्टीसे उनके योगदान के आधारपर जो सिध्दांत प्रसिध्द है उनमे पध्दतीशास्त्र का सिध्दांत जिसमे समाज तथा सामाजिक घटनाओं का अध्ययन वैज्ञानिक पध्दतीसे होना चाहिए इस पर बल दिया गया।

दुर्खीम का सामाजिक एकता का सिध्दांत :–

ईमाइल दुर्खीम ने सामाजिक एकता के सिध्दांत का प्रतिपादन अपनी पुस्तक दी डिवीजन ऑफ लेबर इन सोसाइटी मे किया है। सामाजिक एकता सिध्दांत मे ईमाइल दुर्खीम कहते है की मानव समाज में श्रम विभाजन के परिवर्तित प्रतिमानों के साथ साथ सामाजिक एकता का व कानून के स्वरूप में भी परिवर्तन होता जाता है। दुर्खीम का कहना है की एकता मानव समाज और सामाजिक व्यवस्था का अभिन्न अंग है, इसके बिना सामाजिक संगठन की कल्पना नहीं की जा सकती, यह सर्वकालीक है जो हर समय पाया जाता है किन्तू समय और श्रम विभाजन की प्रक्रिया के साथ साथ इसमे परिवर्तन होता जाता है।[3] सामाजिक एकता का प्रभाव सामाजिक व्यवस्था पर अनिवार्य रूप से पडा करता है।

सामाजिक एकता के प्रकार :–

ईमाइल दुर्खीम का मत हैं की समाजमे सामाजिक एकता के स्वरूप मे परिवर्तन हो रहा है। यह परिवर्तन यांत्रिक एकता से सावयवी एकता के रूप मे होता है। दुर्खीम के यह कथन के आधारपर यह

स्पष्ट होता है कि सामाजिक एकता के मुख्यतया दो प्रकार है। दुर्खीम ने आदिकालीन और साम्यकालीन समाज और श्रम विभाजन के व्यवस्था के आधारपर मानव समाज मे पाई जानेवाली सामाजिक एकता के प्रकारो को दो भागों में विभक्त करके समझाया है।

1) यांत्रिक सामाजिक एकताः–

दुर्खीम समुहवाद की अवधारणा को यांत्रिक एकता में भी प्रयोग करता है। उसका कहना है कि आदिमयूगीन समाज में यांत्रिक एकता पायी जाती है। इसका सीधा अर्थ यह है की जैसे मषिन के विभिन्न कल–पुर्जे एक दुसरे से अलग होते हुए भी वे परस्पर एक दुसरे से कार्योको संचालित करने हेतु जूडे है। आदीम समाज मे भी व्यक्ति एक दूसरे से जूडा होता है। उनमे सामूहीक भावना होती है।[4] इसी लिए ईमाइल दुर्खीमने मषिन से सामाजिक एकता की तूलना की है। इसके लिए दुर्खीमने एक शब्द गढा है यांत्रिक एकता। समाजमे व्यक्ति यंत्र की तरह काम करता रहता है। जैसे यंत्र के कार्य करने की एक पध्दती और दिषा है वह उसी के अनुरूप कार्य करता है। ठीक इसी प्रकार व्यक्ती समाज के नियमों और कानूनो का पालन करता है। आदिमयूगीन समाज में सामाजिक एकीकरण की भावना उच्चतम स्तर पर विद्यमान है। वास्तव में यांत्रिक एकता उन समाजो की विषेषता है जहाँ के व्यक्ती अपनी परंपराओं और प्रथाओं से गहरे रूप में जूडे है। उन्हे बगैर किसी तर्क के पालन करते है। ये उनके सामूहिक जीवन के अभिन्न अंग है। अपने समाज की परंपराओं, नैतिक मूल्यों और आदर्षों को बनाए रखने के लिए उनमे न किसी प्रकार का विवाद होता है और न भ्रम ही उत्पन्न होता है। इस समूह की एकता यंत्रो के पुजों की तरह जूडे और परस्पर बंधे होते है। समूह के व्यक्ती मषिन की तरह कार्य करते है। इसलिय इसे यांत्रिक एकता का नाम दिया गया है।

2) सावयवी सामाजिक एकताः–

ईमाइल दुर्खीम ने सामाजिक एकता के दुसरे प्रकार को सावयवी सामाजिक एकता कहा है। दुर्खीम कहते है की यह सामाजिक एकता का विकसित रूप है। इस प्रकार की सावयवी एकता का स्वरूप शरीर के विभिन्न अंगो की विविधता व एकता के अनुरूप होता है। ईमाइल दुर्खीम कहते है की, आदिम समाजों मे जैसे जैसे जनआबादी बढती गयी वैसे वैसे इनकी आवष्यकताओं मे वृध्दी होती गई जिसका परिणाम यह हुआ कि धीरे धीरे आदिम समाजों का स्थान आधूनिक समाजोंने ले लिया तथा व्यक्तियों में बढती हुई आवष्यकताओं को पूर्ण करने के फलस्वरूप श्रम विभाजन मे वृध्दी हुई तथा श्रम विभाजन के कारण ही समाज में विषेषीकरण की प्रवृत्ती का विकास हुआ और आदिम समाजों में देखी जानेवाली प्रमूख विषेषता यांत्रिक एकता खत्म होती गई दुर्खीम के अनुसार समाजमे सावयवी एकात्मता की अनिवार्य विषेषता श्रम विभाजन का होना है तथा इसने धीरे–धीरे सामाजिक समरूपता को कम कर दिया।[5]

यांत्रिक और सावयवी समाज की तूलना

विशुध्द रूप से कोई भी यांत्रिक समाज यांत्रिक नही होता और न सावयवी समाज विषुध्द रूप से सावयवी होता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि ये दोनों समाज उद्विकास की प्रक्रिया से बराबर गुजरते रहते है। कोई यांत्रिक समाज विकसित होता हुआ आगे बढ जाता है और कोई पिछे। वास्तव में जैसा की रोबर्ट रेडफिल्ड कहते है इन दो प्रकार के समाजों मे यानी ग्रामिण और नगर मे बराबर निरंतरता बनी रहती है। इस गतिषिलता के होते हुए कुछ बिंदूओं पर हम इन दोनो समाजों मे अंतर कर सकते है।

1) यांत्रिक समाज मे भेदभाव नही होता जबकी सावयवी समाज में पर्याप्त विभेदीकरण होता हैः–

यांत्रिक समाज वस्तुतः वहषी, आदिम या ग्रामिण समाज होता है। इस समाज मे लोग लगभग समान होते है। उनकी जीवन पध्दती भी प्रायः एक ही लीक पर चलती है। सभी का व्यवसाय पुजापाठ या राजनितिक व्यवस्था एक समान होती है। सावयवी समाज में विभेदीकरण होता। प्रत्येक काम को करने के लिए कुछ विषिष्ट लोग होते है।[6]

2) यांत्रिक समाज मे व्यक्तिवाद का अभाव होता है जबकी सावयवी समाज मे वैयक्तिक चेतना को स्वतंत्रता होती हैः–

दुर्खीम के तत्कालीन समाजमे उपयोगीतावादी और सुखवादी व्यक्ती को प्रमूख स्थान देते थे। दुर्खीम को यह स्विकार नहीं था। उनकी निष्चित धारणा थी कि यदी व्यक्तिगत चेतना को प्रधानता दी गयी तो ताष के महल की तरह समाज मे व्यक्ति बिखर जायेंगे। इस वैचारिक प्रभाव से दुर्खीम यांत्रिक समाज मे व्यक्ति को निम्न स्थान देते है। सावयवी समाज मे व्यक्ति स्वतंत्र होता है। वह मनमाने ढंग से विनिमय करता है। यदी उसपर कोई नियंत्रण है तो बाजार का। व्यक्ति को इस तरह की स्वतंत्रता होते हूए भी समाज के आगे उसका निर्णय अंतिम नहीं होता।

3) यांत्रिक समाज की सुदृढता सामूहिक चेतना द्वारा और सावयवी समाज की सृदृढता सामुहिक प्रतिनिधान द्वारा बनी होती हैः–

यांत्रिक समाज की आत्मा उसके विष्वासों और संवेगो मे निहित है। गाय या बिल्ली को जान से मार देना सामुहिक विष्वास और संवेग को आघात पहूँचाना है। यदि कोई जाने अनजाने यह अपराध कर देता है तो समाज उसे दंड देता है। इसी कारण विष्वास और संवेग शक्ति के वे स्त्रोत है जिनके माध्यम से समाज की एकता और सम्बध्दता बनी रहती है। सावयवी समाज मे सामूहिक चेतना क्षीण होती जाती है। यहाँ समाज की एकता को बनाये रखने का काम सामुहिक प्रतिनिधान करते है।

4) यांत्रिक समाज मे दमणकारी कानून होता है, जब की सावयवी समाज मे प्रतिकारी या पुनर्स्थापना कानून होता हैः–

यांत्रिक समाज अपराध और दंड की दृष्टी से सावयवी समाज से सर्वथा भिन्न है। यह अंतरप्रायः जमीन आसमान जैसा होता है। यांत्रिक समाज मे अपराध वह है जो सामूहिक चेतना को ठेस पहूँचाए उसपर आघात करे। इस समाज में अपराध का सीधा मतलब होता है समाज कि सुदृढता मे

दरार पैदा करना। सावयवी समाज मे अपराध वह है जो संविदा या अनुबन्ध का उल्लंघन करें। यहाँ अपराध व्यक्तियोंपर केंद्रीत है। जबकी यांत्रिक समाज का अपराध सीधा समूह से सरोकार रखता है।

5) यांत्रिक समाज की सृदृढता नैतिकता पर आधारित होती है जबकी सावयवी समाज की सुदृढता अनुबन्ध पर निर्भर होती हैः–

यांत्रिक समाज मे कोई लिखा पढी नहीं होती परंपरा के अनूसार लोग अपना काम करते है। जो भी अनुबंध या करार होते है सब मौखिक। न कोई दस्तावेज और न कोई गवाह। लोगो के संबंध पूर्ण रूप से परंपरागत आचार और नैतिकता से बंधे होते है। सावयवी समाज में जहाँ लोग एक दुसरे को व्यक्तिगत रूप से नही जानते, नैतिकता की भूमिका बहूत सिमित होती है।

6) यांत्रिक समाज अपने सदस्यों को प्रत्यक्ष रूप से जोडता है जबकी सावयवी समाज मे यह जोड या एकता प्रकार्यात्मक निर्भरता द्वारा आती हैः–

दुर्खीम कहते है कि जिस तरह की सृदृढता यांत्रिक समाज मे होती है कुछ वैसी ही सुदृढता सावयवी समाज मे भी होती है। यांत्रिके समाज मे विषिष्टीकरण नही होता। लोग एक जैसे या मिलते जूलते धन्धे करते है। जैसे हमारे यहा गांव के लोग या आदिवासी खेतीबाडी करते है वैसे ही यांत्रिक समाज मे व्यक्ति अपने धन्धे को लेकर दुसरो पर निर्भर नहीं रहता। सावयवी समाज में व्यक्ती गुमनाम हो जाता है। उसका दूसरे व्यक्तियों के साथ जो भी संबंध होता है वह कार्यो को लेकर होता है। मानवषास्त्री इसे प्रकार्यात्मक निर्भरता कहते है। इस समाज की एकता और सम्बधता प्रकार्यो के संबंध के कारण होती है।

उपसंहार :–

ईमाइल दुर्खीम एक चरित्रवान व्यक्ति थे। एक स्थान पर राल्फ वेल्डो इमरसन लिखते है की ऐसे व्यक्ति उस समाज की आत्मा होते है जिसमे वे रहते है। वास्तव मे दुर्खीम अपने समय की विचार धारा, घटनाओं और परिस्थितीयों के दर्पण थे। उनमे झांक कर देखो और समाज की छवि उजागर हो जायेगी। दुर्खीम ने अपने मनोवांछित सिध्दातों को व्यवहार मे लाकर अपने समय की घटनाओं को व्यवस्थित रूप से रखने का प्रयास किया।

जीवन पर्यन्त दुर्खीम अपने समय के नैतिक मुद्दों के साथ पुरी तरह से समर्पित होकर संघर्षरत रहे। उनके जीवन का उद्देष यही था कि जिस फ्रांस राष्ट्र के वे निवासी थे। उसका नैतिक पुनर्जीवन किया जाये। लेकिन वे कभी भी अपने उद्देष्य प्राप्ती में किसी तरह की कोताही करना नहीं चाहते थे। उनकी यह दृढ मान्यता थी कि एक समाज वैज्ञानिक को अपने समाज की गतीविधियों मे दखलंदाजी करनी चाहिए और उन्होंने यह देखा भी कि जिस तरह वैज्ञानिक पध्दती से उन्होंने जाँच पडताल की उसके प्रति लोगों का विष्वास भी बढा। दुर्खीम इस प्रकार के समाज विज्ञान का निर्माण करना चाहते थे जो सार्वजनिक गतिविधियों की आधारषिला बन सके।

संदर्भ सूची :–

1) Samajikayshiksha.com

2) essaysinhindi.com

3) digicgvision.in

4) Sarkariguider.in

5) sbistudy.com

6) एस.एल.दोषी, पी.सी.जैन सामाजिक विचारक रावत पब्लिकेषन, जयपूर.